

॥ रामाष्टकम् ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम्।
 स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम्॥ १ ॥
 जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम्।
 स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥ २ ॥
 निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम्।
 समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥ ३ ॥
 सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम्।
 निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम्॥ ४ ॥
 निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्।
 चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम्॥ ५ ॥
 भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।
 गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम्॥ ६ ॥
 महासुवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः।
 परं ब्रह्मसद्वापकं भजे ह राममद्वयम्॥ ७ ॥
 शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्।
 विराजमानदेशिकं भजे ह राममद्वयम्॥ ८ ॥
 रामाष्टकं पठति यः सुखदं सुपुण्यं
 व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः।
 विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
 सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्॥ ९ ॥
 ॥ इति श्री-व्यासविरचितं श्री-रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:

<http://stotrasamhita.net/wiki/Ramashtakam>.

generated on April 10, 2025

Downloaded from <http://stotrasamhita.github.io> | StotraSamhita | Credits